



अक्टूबर: 2020

वर्ष : 4 अंक : 1

# सिफरी मासिक समाचार

## नील क्रांति की ओर अग्रसर



### निदेशक की कलम से



संस्थान का मासिक समाचार, अक्टूबर 2020 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सर्वप्रथम आप सभी को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई। भाषा व्यक्ति को जोड़ती है व्यक्ति को जोड़ने से परिवार बनता है परिवारों के जुड़ने से समाज बनता है, समाज से गाँव, गाँव से शहर, शहरों से महानगर और महानगरों से देश। इस प्रकार देश के विकास में इस भाषारूपी जुड़ाव का मजबूत होना अति आवश्यक है। यह जुड़ाव भाषा के माध्यम से ही मजबूत हो सकता है और वह भी उस भाषा से जो सबसे अधिक बोली जाती है। हमारे देश में यह स्थान हिन्दी भाषा को प्राप्त है और वह भी सदियों से, क्योंकि स्वाधीनता संग्राम के समय से ही भी देश के कोने-कोने से स्वाधीनता सेनानियों ने इसे संपर्क भाषा के रूप में बहुत ही प्रभावी तौर पर प्रयोग किया था। इसका विकास और प्रसार आज भी उतना ही प्रसांगिक है।



14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान द्वारा संवैधानिक तरीके से हिंदी को आधिकारिक भाषा का रूप दिया गया और उसी दिन से हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। पर यह हमारा दुर्भाग्य है कि स्वतंत्रता के 73 वर्ष बाद भी हिंदी को वह स्थान नहीं मिल सका है। इसकी वजह कई हैं - आज के दौर में बच्चों को अंग्रेजी सिखाना जरूरी समझा जाता है। हम हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाते हैं हमें हिंदी को अधिकाधिक रूप से वैयक्तिक प्रष्ठभूमि में सर्वोत्तम संपर्क भाषा बनाना है तो हमें हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करना होगा।



इस माह संस्थान दिनांक 14 से 21 सितंबर के बीच वर्चुअल मोड में हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान मुख्यालय और क्षेत्रीय केन्द्रों के सहकर्मियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय खुला जल क्षेत्रों में लघु स्तर पर मत्स्य पालन की स्थिति एवं अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें भारत सहित कनाडा, एफएओ, इटली, बेल्जियम, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, फिलिपींस और मलेशिया के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

मैं आप सभी को हिन्दी सप्ताह की हार्दिक बधाई देता हूँ और आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। धन्यवाद,

बिके दास

(बसन्त कुमार दास)

## आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए सिफरी एच डीपी ड पेन तकनीक



देश में लगभग 2 लाख हेक्टेयर बाढ़कृत मैदानी क्षेत्र और 18 लाख हेक्टेयर छोटे जलाशयों का क्षेत्र है जिनकी उत्पादन क्षमता का उपयोग अभी तक पूरी तरह से नहीं किया गया है। इन जल निकायों में मछली उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता है। अध्ययन में यह देखा गया है कि इन निकायों में मात्स्यिकी प्रबंधन की जटिलता के कारण जलीय कृषि में समस्याएँ आती हैं। इन समस्याओं से निबटने के लिए एक अच्छा समाधान मिलता है और वह है-घेरे में मछली पालन (पेन पालन)। इस पालन प्रक्रिया में मछलियों को जल निकायों में पेन क्षेत्र में संचयित कर पालन किया जाता है। हाल के वर्षों में इन पेन क्षेत्रों में पौनों से अंगुलिका पालन अथवा अंगुलिका से तरुण मछलियों का पालन किया जा रहा है। प्रभावी मत्स्य प्रबंधन के लिए समग्र दृष्टिकोण, जिसमें पर्यावरण, मछली संचयन, मत्स्य प्रजाति और मत्स्य आवास स्थलों को इष्टतम परिणामों के साथ समन्वित करना चाहिए। पेन पालन के लिए जल निकाय के मध्यवर्ती और उथले क्षेत्रों का उपयोग किया जा सकता है। यह खरपतवार वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है जहाँ मत्स्ययन में समस्या होती है। इसमें स्वस्थ मछलियों प्रजातियों को संचयित किया जा सकता है और यह मछुआरों के लिए अतिरिक्त आय का साधन भी है।

### पेन में मछली पालन तकनीक

यह बहुत ही सरल और सस्ती तकनीक है। पेन संरचना का आकार चौकोर या आयताकार और इसका क्षेत्रफल 0.1 से 0.2 हेक्टेयर तक होता



है। पेन की दीवार की ऊँचाई पानी के गहराई पर निर्भर करती है। इसको नदियों और जलधाराओं के उथले क्षेत्र, बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्र, झील, जलाशय यानि जहाँ पर जलक्षेत्रों में पानी कम से कम 4-8 महीने उपलब्ध हो और जलक्षेत्र की गहराई 1.5 से 2.5 मीटर हो वहाँ पर स्थापित किया जा सकता है। जल निकाय का तल सपाट और विशेषतः मिट्टी रेतीली-दोमट होनी चाहिए। पेन के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री इस बात पर निर्भर करती है कि किस प्रकार की मछली का पालन किया जाना है-पोना अथवा बड़ी मछलियाँ। पोना अथवा बड़ी मछलियाँ का पालन जल निकाय की प्रकृति पर निर्भर करती है अर्थात चयनित जलक्षेत्र एक आर्द्रक्षेत्र अथवा जलाशय हो सकता है। पेन संरचना की लागत खर्च को कम करने के लिए बाड़ों को संकीर्ण बनाना चाहिए है। दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में संलग्नक स्क्रीन विभाजित



बांस की चटाई से बने होते हैं और आमतौर पर 1 से 2 मीटर की दूरी पर ऊर्ध्वाकार पोल से बारी-बारी से लगाये जाते हैं। नीचे की तरफ से मछलियों के प्रवेश या पलायन को रोकने के लिए बांस की स्क्रीन लगाई जाती है। इस स्क्रीन को पानी के स्तर से लगभग 1 मीटर की ऊँचाई पर लगाना चाहिए। सावधानी के तौर पर संचयित मछलियों की अतिरिक्त सुरक्षा के लिए बांस की स्क्रीन के अंदर उपयुक्त नायलॉन की जाल या एचडीईपी स्क्रीन लगाई जाती है। वर्तमान में बांस इतना महंगा हो गया है कि बांस की चटाई के स्थान पर एक मोटी एचडीपीई नेट का उपयोग किया जाता है। जलाशयों में हवा के उच्च वेग को रोकने के लिए बांस के स्थान पर सीमेंट से बने खंभों का भी उपयोग किया जाता है।



## उपयुक्त प्रजातियां

पेन में मछली पालन के उपयुक्त जलीय प्रजातियां हैं- प्लवकभोजी, डिट्रिटसभोजी और तलछट में उपस्थित पदार्थों को खाने वाली। खरपतवारों



को नियंत्रित करने के लिए फाइटोफैगस प्रजाति को भी शामिल किया जा सकता है। ताजे पानी के झींगों के साथ देशी और विदेशी कार्प प्रजातियों का एक संयोजन अत्यधिक सफल साबित हुआ है। हालांकि आर्थिक दृष्टिकोण से, मीठे पानी के झींगे का एकलपालन अधिक लाभदायक पाया गया है। मिश्रित पालन के

लिए लेबियो कतला, हाइपोथालमिक्थिस मॉलिट्रिक्स, लेबियो रोहिता और सिरहिनस मृगला के साथ झींगा प्रजाति मैक्रोब्रैकियम रोसेनबर्गी को भी उपयुक्त प्रजाति माना गया है। प्रजातियों का अनुपात एल. कतला (20%), एच. मॉलिट्रिक्स (15%), एल. रोहिता (20%) और सी. मृगला (45%) होना चाहिए। मिश्रित पालन में सी. मृगला के स्थान पर मैक्रोब्रैकियम रोसेनबर्गी को लिया जा सकता है। आर्थिक रूप से उच्च मूल्य वाली मत्स्या प्रजातियाँ, जैसे ओम्पोक बिमाकुलैटस, मिस्टस विटेस, पुंटियस साराना, बारबोनुमस गोनिनोनुस, एल. बाटा, एम्बीफेरिंगोडॉन मोला और अन्य छोटी स्वदेशी प्रजातियों का पालन पेन क्षेत्र में कर सकते हैं।



## सिफरी एच डी पी ड पेन तकनीकी

सिफरी ने 2018-19 में सीआईएफआरआई मॉडल एचडीपीई पेन का व्यवसायीकरण किया है जहां बांस के पोल को अधिक स्थायित्व और लागत प्रभावी बनाने के साथ एचडीपीई पोल से बदल दिया गया है जिसपर विभिन्न राज्यों के मत्स्य निदेशालयों ने स्वीकृति प्रदान की है। पश्चिमी देशों और जापान में धातु या एचडीपीपी स्क्रीन का उपयोग अक्सर किया जाता है, जो अत्यधिक टिकाऊ होते हैं पर विकासशील देशों में यह महंगा है और इसका प्रयोग भी निषेध किया गया है।

पूरे भारत के चयनित जल निकायों में पेन पालन का प्रयोग किया जाता है। भवानीसागर (तमिलनाडु) के पुंगर दलदली क्षेत्र में बांस के फट्टों 247.5 वर्ग मीटर घिरे क्षेत्र में सी. मृगला (7 मिमी) और लेबियो फिमब्रिएटस (5 मिमी) के पोना मछलियों को 4.6 मिलियन पोना प्रति हेक्टेयर की दर से संचयित कर पालन किया गया। 30 दिनों में, सी. मृगला और लेबियो फिमब्रिएटस का आकार क्रमशः 38 मिमी और 28 मिमी देखा गया है। 3 महीने के अध्ययन के बाद इनका आकार क्रमशः 88 मिमी और 75 मिमी का प्राप्त किया जा रहा है। कुल उत्तरजीविता दर 27.8 प्रतिशत दर्ज किया गया। वर्ष 1982 के बाद तुंगभद्रा जलाशय में हर वर्ष पेन में मेजर कार्प के बीजों का पालन किया जा रहा है।

हम्पासागर के पास जलाशय की एक उथली खाड़ी क्षेत्र में भारतीय मेजर कार्प की विभिन्न प्रजातियों के स्पॉन को संचयित (स्टॉकिंग घनत्व 5 से 20 मिलियन स्पॉन / हेक्टेयर) किया जाता है।



इन स्पॉन को प्रतिदिन मूंगफली की खली और चावल की भूसी (1:1 अनुपात) का मिश्रण खिलाया जाता है। 2 से 4 महीने के बाद विकसित अंगुलिकाओं को जलाशय में छोड़ा जाता है। विभिन्न नर्सरी पेन से मछलियों की उत्तरजीविता 11 से 30 प्रतिशत दर्ज की गयी है।

बिहार की कांति झील में बड़ी मछली उत्पादन के लिए एक पेन क्षेत्र (120 वर्ग मीटर) में इस प्रकार कि पालन प्रक्रिया से 25 टन मछली / हेक्टेयर / 6 महीने मत्स्य उत्पादन प्राप्त किया गया है। पेन क्षेत्र में कतला, रोहू और मृगल मछलियों (4 मछली प्रति वर्ग मीटर) को क्रमशः 7: 12: 6 के अनुपात में संचयित किया गया था। इन मछलियों को उनके शरीर भार के 5 से 10% की दर से चावल की भूसी और सरसों की खली (2:1 अनुपात) के मिश्रण के साथ खिलाया गया था। प्रयोग अवधि के भीतर कतला, रोहू और मृगल (प्रारंभिक आकार क्रमशः 166, 75 और 120 ग्राम) का औसत आकार क्रमशः 1100, 800 और 750 ग्राम तक प्राप्त किया गया।

कार्प पालन में मछली का उत्पादन 4000-5000 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष प्राप्त किया जा सकता है। कार्प और झींगे की मिश्रित पालन में कार्प का उत्पादन 2000-2500 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष हो सकती है और झींगे 500-800 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष हो सकता है। झींगे के एकल पालन में केवल चार महीनों में औसतन 1300 किलोग्राम / हेक्टेयर की उपज प्राप्त की जा सकती है। ओडिशा के जलाशयों में अब सीआईएफआरआई एचडीपीई मॉडल पेन के साथ पेन पालन को और भी व्यापक तौर पर अपनाया गया है। भविष्य में इस पालन को अधिक से अधिक जल निकायों में उपयोग किया जायगा।

पेन में मछली पालन से रोजगार, आय और भोजन सुरक्षा में विकास हो सकता है। यह पालन प्रणाली सस्ता और सरल होता है इसलिए इन्हे व्यापक तौर पर अपनाया जा सकता है। पर साथ ही इसमें नुकसान का सामना भी करना पड़ता है क्योंकि तूफान और अन्य प्राकृतिक आपदाओं

से नुकसान के साथ अवैध शिकार की संभावना भी अधिक होती है। इस पालन पद्धति को अपनाने के लिए एकीकृत संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता है। साथ ही, संबंधित पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके अलावा, पर्याप्त कौशल, अच्छे बाजार, स्पष्ट मार्गदर्शी सिद्धान्त और संसाधन उपयोगकर्ताओं की पूर्ण भागीदारी पर भी ध्यान देना चाहिए।







इस उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि डॉ (श्रीमती) विजय लक्ष्मी सक्सेना, महाध्यक्ष (निर्वाचित), भारतीय विज्ञान कांग्रेस ने सर्वप्रथम हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ व्यक्त की तथा निदेशक महोदय को हिन्दी कार्यों की उपलब्धियों और पुरस्कारों के लिए बधाई दी। डॉ (श्रीमती) सक्सेना ने बताया कि देश की वर्तमान सरकार भी हिन्दी को बहुत बढ़ावा दे रही है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री भी “मन की बात” हो अथवा अन्य संबोधनों में हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं।

विशेष अतिथि डॉ० अशोक सक्सेना, पूर्व महाध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस ने कहा कि हिन्दी भाषा को तभी मजबूत किया जा सकता है जब प्रादेशिक भाषाओं को भी सशक्त बनाया जाय। उन्होने यह भी बताया कि कैसे भारतीय रिजर्व बैंक ने चेक बूक पर हिन्दी में हस्ताक्षर करने संबंधी आदेश जारी किया। उन्होने



हिन्दी प्रकाशनों की संख्या बढ़ाने पर भी ज़ोर दिया। इस अवसर पर डॉ० अरुण पांडे, भारतीय विज्ञान कांग्रेस, कोलकाता ने हिन्दी दिवस की बधाई दी और अपने विचार साझा किया।

श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने बताया कि हम हर वर्ष हिन्दी सप्ताह/ पखवाड़ा/ मास मानते हैं इस संकल्प के साथ कि अगले वर्ष हमारी प्रगति और अधिक होगी। हिन्दी में अभी भी उच्च गुणवत्ता वाली वैज्ञानिक प्रकाशनों की कमी है इसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए।

संस्थान के निदेशक, डॉ बसंत कुमार दास ने बताया कि हमारा संस्थान गत 3 वर्षों से हिन्दी सप्ताह का आयोजन भारतीय विज्ञान कांग्रेस के साथ मिलकर मनाता आ रहा है। हम प्रत्येक माह हिन्दी के विकास की लिए बैठक करते हैं और प्राप्त सुझावों को क्रियान्वित करते हैं। उन्होने कहा कि पहले की अपेक्षा हिन्दी में बोलने वालों का प्रतिशत बढ़ा है। टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार, वर्ष 2001 में हिन्दी बोलने वालों का प्रतिशत 41 था जो अब बढ़कर 44 प्रतिशत हो गया है। हमारे संस्थान में हिन्दी प्रकाशनों की संख्या बढ़ी है। हमारे कार्यकलापों और उपलब्धियों को हिन्दी में विभिन्न मीडिया प्लेटफॉर्म में प्रकाशित किया जाता है जिससे यह हर स्तर तक पहुंचे। उन्होने कहा कि क्षेत्रीय केन्द्रों के प्रभागाध्यक्ष/प्रभारी अधिकारियों को वार्षिक लक्ष्य बनाना चाहिए और उनपर कार्य करना चाहिए। संस्थान मुख्यालय से प्रति माह हिन्दी में मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन किया जाता है जिसमें संस्थान के मासिक कार्यकलापों, उपलब्धियों, अन्य विशेष सूचनाओं को सचित्र वर्णन होता है। निदेशक

महोदय में हिन्दी सप्ताह के दौरान होने वाली प्रतियोगिताओं का उल्लेख किया और कहा कि अधिक से अधिक सहकर्मी इसमें भाग लें और इसे सफल बनाएँ। प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी की हिन्दी विकास में 2 प्रतिशत की भागेदारी होनी चाहिए। उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन श्री प्रवीण मोर्या वैज्ञानिक ने किया और अंत में श्री एस. के. साहू, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

हिन्दी सप्ताह के दौरान संस्थान कर्मियों के लिए कई प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं- जैसे, निबंध लेखन, अनुवाद, कविता पाठ, प्रश्नोत्तरी आदि जिनमें संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्रों ने भी परस्परिक तौर पर एक साथ ऑनलाइन मोड में भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन श्री प्रवीण मोर्या वैज्ञानिक, श्री संजीव कुमार साहू वैज्ञानिक, डॉ सुमन कुमारी वैज्ञानिक, श्री कासिम, मुख्य तकनीकी अधिकारी; सुश्री सुनीता प्रसाद, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी; श्रीमती सुमेधा दास, तकनीकी सहायक के द्वारा संपन्न किया गया संस्थान के इतिहास में यह पहली बार हुआ जब सभी संस्थान कर्मियों ने एक साथ हिन्दी सप्ताह के पूरे कार्यक्रम को एक साथ मनाया। इस सप्ताह का समापन दिनांक 21 सितंबर 2020 को आयोजित किया गया जिसमें प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर इस अवसर पर संस्थान मुख्यालय तथा क्षेत्रीय केन्द्रों के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे। हिन्दी सप्ताह के आयोजन में संस्थान के केन्द्रों के वैज्ञानिक डॉ. अजय साहा, डॉ मोनिका गुप्ता, डॉ सुहास काम्बले और श्री अनिल कुमार यादव ने भरपूर योगदान दिया।



## ओडिशा के बालासोर के ऋषिया जलाशय में पेन में मछली पालन का प्रदर्शन



संस्थान ने दिनांक 30 सितंबर 2020 को बालासोर के ऋषिया जलाशय में पेन में मछली पालन तकनीक का प्रदर्शन किया जो श्री प्रताप चन्द्र सारंगी, माननीय राज्य मंत्री, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, भारत सरकार, की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ. वि. के. दास, निदेशक के नेतृत्व में ऋषिया जलाशय में संस्थान द्वारा विकसित एचडीपीई पेन को स्थापित किया गया जिसमें मत्स्य बीजों का उनके मूल स्थल पर संचयित कर पेन पालन तकनीक से अंगुलिका पालन किया जा सके। यह जलाशय 300 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है और 112 मछुआरे सक्रिय तौर पर मछली पकड़ने के लिए इससे जुड़े हुये हैं। संस्थान ने जलाशय से उच्च उत्पादन के लिए 80-100 मिमी से अधिक मछली के बीज संचय करने का सुझाव दिया है। चूंकि बड़े आकार के मत्स्य बीजों की लागत बहुत अधिक होती है और बाजार

में इनकी उपलब्धता भी कम होती है, इसलिए संस्थान ने पेन पालन द्वारा बड़ी आकार के मत्स्य बीज का उत्पादन आरंभ किया है। इस जलाशय में 0.1 हे. के दो पेन लगाए गए हैं जिसमें माननीय मंत्री ने 32,000 मत्स्य बीजों को पेन में छोड़ा। साथ ही मछुआरों को मत्स्य आहार के रूप में CIFRI CAGEGROW® मछली फीड भी वितरित किया गया।

माननीय मंत्री ने अपने संबोधन में आजीविका विकास के लिए मछुआरों के बीच सहयोग और एकता पर जोर दिया। उन्होंने जलाशय से उत्पादन बढ़ाने के लिए जलाशय में संचयित करने के लिए पर्याप्त मात्रा में बड़ी अंगुलिकाओं (80-100 मिमी मछली के बीज) के उत्पादन







के लिए पेन पालन तकनीक को अपनाने पर जोर दिया। संस्थान के निदेशक ने माननीय मंत्री का स्वागत किया और उन्हें ओडिशा में संस्थान द्वारा की जा रही गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि संस्थान के इस तकनीक के कारण इस जलाशय से अतिरिक्त मछली उत्पादन कम से कम 20 टन होगा।

दिनांक 30 सितंबर 2020 को पिकासिधा और केशपुरा गाँवों में जलेश्वर आर्द्रभूमि के 4 पेन क्षेत्रों में 80,000 मछलियों के बीज डाले गए जिससे 300 से अधिक परिवारों की आजीविका बढ़ाने में मदद मिलेगी। एक अन्य कार्यक्रम में, संस्थान के निदेशक ने ओडिशा के मयूरभंज जिले के सूनी

बांध में 40 हजार मछली बीजो को प्रवाहित किया जिससे 157 मछुआरें लाभान्वित होंगे। दिनांक 29 सितंबर 2020 को मयूरभंज, ओडिशा की चालीस महिला मछुआरों को सजावटी मछली पालन पर पालन और प्रजनन के संबद्ध में प्रशिक्षण दिया गया। ओडिशा के मयूरभंज जिले के नलगाजा और बादशाही गाँवों की महिला मछुआरों को मछली बीज, मछली फ्रीड और दवाइयां वितरित की गई। सजावटी मछली पालन पर संस्थान ने महिला मछुआरों को सजावटी मछली पालन के लिए एफ़आरपी टैंकों को वितरित किया है जिससे उनकी आजीविका में सुधार में मिलेगी। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. प्रणय परिदा, वैज्ञानिक ने किया। अन्य सहयोगियों में डॉ. संजय भौमिक, मुख्य तकनीकी अधिकारी, श्री सुजीत चौधरी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी; श्री कौशिक मंडल, तकनीकी सहायक; श्रीमती संगीता चक्रवर्ती, तकनीकी सहायक और सुश्री श्रेया भट्टाचार्य, वाईपी प्रमुख हैं।



## ରିଷିଆ ତ୍ୟାମ୍ ପରିଦର୍ଶନରେ ଆସିଲେ କେନ୍ଦ୍ରମନ୍ତ୍ରୀ, ବୈଷୟିକ ଟିମ୍ ମାଛ ଚାଷରେ ସ୍ଵାବଲମ୍ବୀ ହେବେ ଶହ ଶହ ପରିବାର

ନାଳଗିରି,ମାର୍ଚ୍ଚ(ଆ.ପ୍ର): ନାଳଗିରି ରିଷିଆ ତ୍ୟାମ୍ ପରିଦର୍ଶନରେ ବୁଧବାର ଆସିଥିଲେ ବାଲେଶ୍ଵର ସମ୍ପଦ ତଥା କେନ୍ଦ୍ରମନ୍ତ୍ରୀ ପ୍ରତାପ ଚନ୍ଦ୍ର ଷଡ଼ଙ୍ଗା। ତାଙ୍କ ସହିତ ଥିଲେ କେନ୍ଦ୍ର ମତ୍ସ୍ୟ ସମ୍ପଦ ବିଭାଗ ଡିପାର୍ଟ୍ଟ୍ମେଣ୍ଟର ଅଧିକାରୀ। ଏହି ଅବସରରେ ଅନ୍ଧପାଖ ଅଞ୍ଚଳର ଶତାଧିକ ପରିବାର ମାଛ ଚାଷ କରି ସ୍ଵାବଲମ୍ବୀ ହେବା ନିମନ୍ତେ ଦୁ-ପ୍ରାଣ ଟିଆରି କରାଯାଇଛି। ନାଳଗିରି ବୁଲଡିଙ୍ଗ ଅଭୟାରଣ୍ୟ ପାଦଦେଶରେ ଏକ ବିଭାଗ ଜଳ ଭଣ୍ଡାର ରହିଛି। ଯହାକି ରିଷିଆ ତ୍ୟାମ୍ ନୀତିର। କ୍ଷୁଦ୍ର ଜଳସେଚନ ବିଭାଗ ଦ୍ଵାରା ପରିଚାଳିତ ଏହି ତ୍ୟାମ୍ରେ ଅଞ୍ଚଳବାସୀ ମାଛ ଚାଷ କରି ପରିବାର ଚଳାଇଛନ୍ତି। ମାତ୍ର ଆବଶ୍ୟକ କିଛିକୂଳି ନଥିବାରୁ ମତ୍ସ୍ୟ ସମ୍ପଦ ବିଭାଗର କେନ୍ଦ୍ରମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଷଡ଼ଙ୍ଗା ଏହାର ବିକାଶ ପାଇଁ କେନ୍ଦ୍ର ସରକାରଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ଆକର୍ଷଣ କରିଥିଲେ। ଏପରିକି ଆନବି-ସଂସାର ବିଭାଗ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ମତ୍ସ୍ୟ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ କେନ୍ଦ୍ର (କୋଲକାତା)ର ଅଧିକାରୀମାନଙ୍କ ପୂର୍ବରୁ ଏଠାକୁ ଆସି ଚର୍ଚ୍ଚା କରି ପୋଷିଥିଲେ। ବୁଧବାର କେନ୍ଦ୍ରମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଷଡ଼ଙ୍ଗାଙ୍କ ସହ ଏହି ତ୍ୟାମ୍ରେ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଡ. ବସନ୍ତ କୁମାର ଦାସ ଓ ବୈଷୟିକ ଡ. ପ୍ରଭାକର କୁମାର ପରିତା,



ବୈଷୟିକ ଅଧିକାରୀ ଦୁର୍ଜିତ ଚୌଧୁରୀ, ଟିଏ ସଂସାର ଚନ୍ଦ୍ରବର୍ତ୍ତୀ ଓ କୌଶିକ ମଣ୍ଡଳ, ପ୍ଵାଇପି ଶ୍ରେୟା ଜଳ ଚାପିତ ପ୍ରମୁଖ ରିଷିଆ ତ୍ୟାମ୍ ପରିଦର୍ଶନ କରିଥିଲେ। ଆଧୁନିକ ପ୍ରଣାଳୀରେ ମାଛ ଚାଷ କରି ଅଞ୍ଚଳବାସୀ କିପରି ସ୍ଵାବଲମ୍ବୀ ହେବେ; ଏନେଇ ସ୍ଵାମୀୟ ମତ୍ସ୍ୟ କର୍ମଚି ଓ ଅଞ୍ଚଳବାସୀଙ୍କ ସହ ଆଲୋଚନା କରିଥିଲେ।

ମାଛ ବାଳିଆ, ବେରୁଟି, ମାଗୁର ଆଦି ଏହି ମାଛ ଶାଳ ଯାଇଛନ୍ତି। ଏଣୁ ମାଛ ଆମଦାନୀ କମ୍ ହେଉଥିବା ମତ୍ସ୍ୟ ବିଶେଷଜ୍ଞ ଡ. ପରିତା ଅଞ୍ଚଳବାସୀ ତଥା ମତ୍ସ୍ୟ ଅବସର କରିଥିଲେ। କେନ୍ଦ୍ରମନ୍ତ୍ରୀ ଶହ ଶହ ଆଦିବାସୀ ପରିବାରକୁ ମାଛ ଚାଷ କରି ସ୍ଵାବଲମ୍ବୀ ହେବାକୁ ଆହ୍ଵାନ ଦେବା ସହ ଆବଶ୍ୟକ କିଛିକୂଳି ଯୋଗାଇଦେବାକୁ

ସାଫଳିକ ମତ୍ସ୍ୟ ସେ ମାଗଣାରେ ଯୋଗାଇ ଦେବାକୁ ପ୍ରତିଶ୍ରୁତି ଦେଇଥିଲେ। ଆଜି ମତ୍ସ୍ୟ କିଛି ଦାନା ମତ୍ସ୍ୟ କର୍ମଚିକୁ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଛି। ଏପରିକି ଅଞ୍ଚଳବାସୀଙ୍କୁ ନେଇ ବୈଠକ କରିଆରେ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର ଶିବିର ଆୟୋଜନ କରାଯିବ। ଆଦିବାସୀ ମହିଳା ମତ୍ସ୍ୟ ଗଣାଙ୍କ ପାଇଁ ୬୦ ପ୍ରତିଶତ ସହଯୋଗ ରହିଛି। ଚନ୍ଦ୍ର ସହିତ ଯେଉଁମାନେ ଦେପାଳ କରିବେ; ତାଙ୍କୁ ବରପ ବାବୁ ସହ ସାଜକେଇ ଜିଏ ବାଇଲ୍, ମାଛ ଗୋଦାନ ପାଇଁ ୧୦ ଲକ୍ଷ ଟଙ୍କା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ରାଶ ପ୍ରଦାନ ବିଭାଗ ପକ୍ଷରୁ ଯୋଗାଇ ଦେବାର ବ୍ୟବସ୍ଥା ରହିଛି ବୋଲି ମନ୍ତ୍ରୀ କହିଥିଲେ। ଏହାଛଡ଼ା ୫୦ କୋଟି ଟଙ୍କା ବ୍ୟୟରେ ମାଛ ଆମଦାନୀ ତଥା ରପ୍ତାନି ଜଣ୍ଡାର ଶୋଲାପିଟ ବୋଲି ଜଣାଇଛନ୍ତି। କେନ୍ଦ୍ରମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ତ୍ୟାମ୍ ପରିଦର୍ଶନ ସମୟରେ ତାଙ୍କର ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ସହାୟକ ଚନ୍ଦ୍ରବିହୁ ଦାସ, କେସିପୁରର ପୂର୍ବତନ ସମିତି ସଭ୍ୟ ସୁରେଶ କୁମାର ନାୟକ, ସରପଞ୍ଚ ମହେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ସିଂ, ମତ୍ସ୍ୟ କର୍ମଚିର ସଦସ୍ୟ ସିଦ୍ଧେଶ୍ଵର ଦାଶ, କାର୍ଯ୍ୟକ ଚନ୍ଦ୍ର ଦାଶ ଏବଂ

## अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:

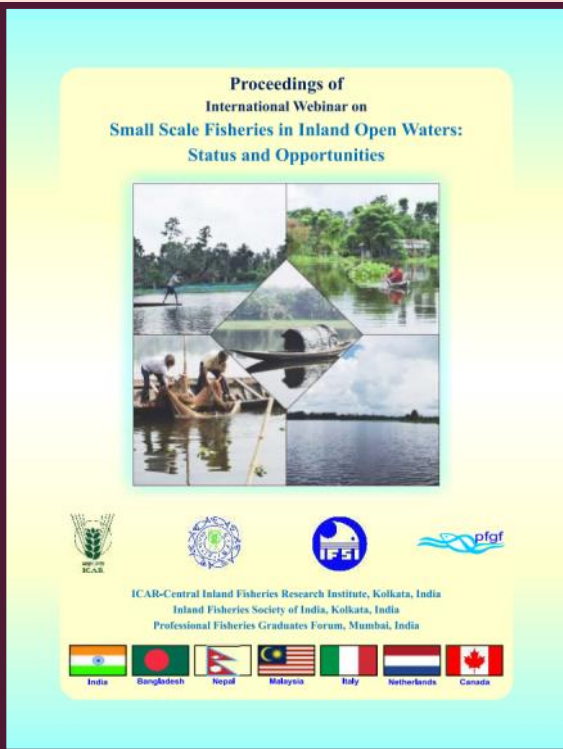
### "अंतर्स्थलीय खुला जल क्षेत्रों में लघु स्तर पर मत्स्य पालन स्थिति एवं अवसर" पर ग्लोबल वेबिनार



लघु स्तर पर मत्स्य पालन ऐसी पारंपरिक मछली पालन पद्धति है जो वाणिज्यिक कंपनियों द्वारा नहीं अपितु घरेलू स्तर पर नियंत्रित होती हैं। इस प्रकार के पालन में लागत पूंजी और ऊर्जा, दोनों ही कम लगती है। इसमें मछलियों को छोटी नाव की मदद से आसपास के जल निकायों से स्थानीय खपत के लिए पकड़ा जाता है। लघु स्तर पर मत्स्य पालन की गतिविधियों में आमतौर पर स्थानीय और घरेलू बाजारों में मछलियों और मत्स्य उत्पादों की आपूर्ति के साथ-साथ निर्वहन के लिए मछली का उपभोग शामिल है। इसके साथ ही मछुआरों को अन्य कार्य जैसे जाल और नाव बनाना, नाव के इंजन की मरम्मत और रखरखाव आदि, अतिरिक्त रोजगार और आय के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुये भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) ने भारत, कनाडा, एफ.ए.ओ, इटली, बेल्जियम, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, फिलिपिन्स और मलेशिया के विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और संस्थानों की पारस्परिक भागीदारी के साथ एक वेब-आधारित पैन-एशिया विचार मंथन सत्र का आयोजन किया जिसका उद्घाटन डॉ. जे.के.जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा 9 सितंबर 2020 को किया गया। इस वेबिनार का आयोजन 9-10 सितंबर 2020 को सिफरी, बैरकपुर; आईएफएसआई, बैरकपुर और पीएफजीएफ इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस वेबिनार का उद्देश्य छोटे पैमाने पर मत्स्य पालन की वर्तमान स्थिति की समीक्षा, मत्स्य पालन के प्रबंधन को बढ़ाने के लिए भविष्य की रणनीति तैयार करना और राष्ट्रीय और उप-क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से पांच प्रमुख सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करना है।

इस वेबिनार में संस्थान (सिफरी) के निदेशक डॉ. बि.के.दास ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि लघु स्तर पर मत्स्य पालन में प्राकृतिक और मानवजनित हस्तक्षेपों के कारण यह अत्यधिक असुरक्षित हो गया है, जिससे गरीब मछुआरों / मछली-श्रमिकों को रोजगार और आजीविका का नुकसान हो रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि कोविड-19 महामारी ने छोटे पैमाने पर मत्स्य पालन से युक्त मछुआरों की आजीविका को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इसलिए आर्द्रभूमि, जलाशयों और नदीय भागों में लघु स्तर पर मत्स्य पालन को बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता है। सिफरी आर्द्रक्षेत्रों में मत्स्य पालन को बढ़ाने के लिए गंगा नदी के बेसिन में नमामि गंगे परियोजना के तहत वर्ल्ड फिश सेंटर के साथ हमारा संस्थान मिलकर काम कर रहा है।



भाकृअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई के पूर्व निदेशक डॉ. दिलीप कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि लघु स्तर पर मत्स्य पालन बांग्लादेश में लगभग 75 प्रतिशत और भारत के अंतर्स्थलीय क्षेत्र में 70-80 प्रतिशत का योगदान दे रहा है।

वर्ल्ड फिश सेंटर, पेनांग, मलेशिया के डॉ. सी. वी. मोहन ने अपने संबोधन में इस महत्वपूर्ण वेबिनार के आयोजन के लिए सिफरी को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि वर्ल्ड फिश सेंटर कई देशों के साथ मिलकर छोटे पैमाने पर मत्स्य प्रबंधन को बढ़ाने और बेहतर बनाने के लिए काम कर रहा है।

डॉ. जे के जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में भारत के छोटे पैमाने के मछुआरों की भूमिका पर जोर दिया और कहा कि यह एक गतिशील और अतुलनीय क्षेत्र है जहां छोटे बच्चे भी इसके बुनियादी ढांचे में भाग लेते हैं। अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन लगभग सम्पूर्णतः और पारंपरिक तौर पर लघु स्तर की मात्स्यिकी पर निर्भर है। इस क्षेत्र के लिए कई नीतिगत दिशा-निर्देश तैयार किए गए हैं लेकिन अब तक इन्हें ठीक से लागू नहीं किया गया है। आज ऐसे मत्स्य पालन क्षेत्र को सशक्त करना और स्थिर बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र के विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रमों, पायलट परियोजनाओं और संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन के तालमेल की आवश्यकता है। दुनिया के विभिन्न देशों के विशेषज्ञों द्वारा वेबिनार के विभिन्न तकनीकी सत्रों में 30 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। भारत और विदेशों के वैज्ञानिकों सहित 700 से अधिक प्रतिभागियों ने वर्चुअल माध्यम से भाग लिया।



## मुख्य शोध उपलब्धियां

- पश्चिम बंगाल के छह आर्सेनिक प्रभावित आर्द्रभूमियों में आर्सेनिक की मात्रा का अध्ययन किया गया। अध्ययन में जल में आर्सेनिक की कुल सांद्रता 15.27-27.90 मिलीग्राम प्रति लीटर पायी गयी जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा पेय जल की निर्धारित सीमा (10 मिलीग्राम प्रति लीटर) से अधिक थी लेकिन अधिकतम एकाग्रता मानदंड (यूएसईपीए राष्ट्रीय अनुशंसित जल गुणवत्ता मानदंड) से बहुत कम थी। तलछट में आर्सेनिक की सांद्रता 408.22-1026.01 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम दर्ज की गई।
- कावेरी नदी प्रायद्वीपीय भारत की तीसरी सबसे बड़ी नदी है। पर जल की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए बांधों, बैराज आदि के कारण नदियों में मत्स्य आवास में बहुत परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इन परिवर्तनों के कारण मछलियों पर स्पष्ट प्रभाव देखने को मिल रहा है। तदनुसार, मछुआरों ने भी अपने गियर को इस प्रकार से तैयार किया है जिससे अधिक मछलियों को ठीक प्रकार से पकड़ा जा सके। नदी से मछली पकड़ने के लिए पांच प्रकार के मत्स्यन क्राफ्ट और 30 विभिन्न प्रकार के गियर जालों जिनमें कुछ विनाशकारी जाल भी शामिल हैं, को दर्ज किया गया। इस तरह की सूचनाएँ शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के लिए नदीय मत्स्य पालन के लगातार और दीर्घकालिक प्रबंधन में सहयोगी होंगी।
- भारत में बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी पर कोविड-19 महामारी के प्रभाव का आंकलन एक व्यवस्थित और तीव्र मूल्यांकन पद्धति द्वारा किया गया। इस महामारी के कारण बिहार, पश्चिम बंगाल और असम के मछुआरे लॉकडाउन के कारण क्रमशः 20, 25 और 9 दिन कोई मछली नहीं पकड़ पाये जिससे उनकी आजीविका भी संकट में पड़ गई थी।
- मध्य प्रदेश के सरदार सरोवर भाग के चार सैंपलिंग स्टेशनों में प्लवक आधारित जैव आंकलन किया गया जिसमें कुल 21 पादपप्लवक प्रजातियों को दर्ज किया गया। इसमें पादप प्लवक की 16 प्रजातियां और जन्तु प्लवक की 5 प्रजातियां पायी गईं। राजघाट स्टेशन पर ओसिलेटोरिया और सिनेड्रा प्रजाति की बहुतायत दर्ज की गयी जिसका कारण मानसून के मौसम के दौरान उच्च पोषक तत्वों का प्रवाह होना है।
- पश्चिम बंगाल में मौसमी तौर से खुले बाढ़कृत आर्द्रभूमि (नदिया क्षेत्र : 106 हे.) में सर्वेक्षण किया गया। इस आर्द्रक्षेत्र पर दो प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (PFSCS) के 200 से अधिक मछुआरों की आजीविका निर्भर करती है। अध्ययन के अनुसार ये आर्द्रक्षेत्र 32 मछली प्रजातियों की उपस्थिति के कारण बहुत अधिक उत्पादक माने गये हैं पर गाद, जूट के रेशों को साफ करने तथा अवशिष्टपदार्थों का इसमें प्रवाहित होने के कारण प्रदूषण की समस्या बढ़ जाती है और जल की गुणवत्ता खतरे में देखी गई है।

## गंगा नदी में मछली के संरक्षण और पुनर्स्थापन के लिए हिलसा टैगिंग और कार्प सीडिंग

गंगा नदी का मध्य भाग प्रयागराज से फरक्का तक फैला हुआ है और इस विस्तार क्षेत्र पर निर्भरशील मछुआरों की आय प्रति माह लगभग 9,000 रुपये आँकी गयी है। हालाँकि, नदी के इस खंड में कई प्रमुख मत्स्य प्रजातियों जैसे इंडियन मेजर कार्प, कॉमन कार्प और विशेष रूप से हिलसा मछली के उत्पादन में क्रमिक गिरावट देखी गई है। इन मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण और पुनरुद्धार के महत्व को देखते हुए, संस्थान ने रोहु (लेबियो रोहिता), कतला (कैटला कैटला), मृगला (सिरहिनस मृगला), और कैलबसु (एल. कैलबसु) के तीन लाख बीस हजार से अधिक मछली की अंगुलिमीनों को राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के तहत, साहेबगंज, झारखंड और फरक्का, पश्चिम बंगाल में एक कार्यक्रम में रिहा किया गया। इस अवसर पर, विशेष अतिथि के रूप में, श्री डीएसजीएसएस बाबू, कार्यकारी निदेशक, एनटीपीसी, फरक्का, श्री आर.के.सिंह, अधीक्षण अभियंता, फरक्का बैराज प्राधिकरण और श्री संजीव कुमार, सहायक निदेशक,



आईडब्ल्यूआई (IWAI) और संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास, जिनके नेतृत्व में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ अपने कर्मचारियों के साथ उपस्थित थे।

इसके अलावा, 350 ग्राम के औसत वाली हिलसा को टैग किया गया और प्रयागराज से फरक्का तक गंगा नदी के मध्य में प्रवासी पथ को समझने के लिए छोड़ा गया। 2019-20 के दौरान, 3000 से अधिक



हिल्सा को फरका बैराज के ऊपरी हिस्से से छोड़ा गया और दिलचस्प बात यह रही कि उत्तर प्रदेश के बलिया में 2 टैग कि गई हिल्सा को पकड़ा गया। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि हिल्सा ने गंगा नदी में अपने खोए हुए अभिगमन पथ को फिर से स्थापित किया है। स्वदेशी मछली की संख्या को बढ़ाने के साथ-साथ मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए कोविड 19 महामारी की स्थिति को ध्यान में रखते हुए सही तरीके के साथ इन गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया। इन गतिविधियों को अलग-अलग प्रेस और मीडिया द्वारा व्यापक रूप से प्रसारित किया गया।

### संस्थान द्वारा पश्चिम बंगाल के खोलसे बील में अनुसूचित जाति महिला मछुआरों के लिए अलंकारी मछली पालन इकाई की स्थापना

खोलसे बील घोड़े की नाल के आकारनुमा एक बाढ़कृत आर्द्रभूमि है, जो पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में यमुना नदी से जुड़ी हुई है। इस



सहकारी बील पर लगभग 300 मछुआरों की आजीविका निर्भर करती है जिसमें से 157 मछुआरे केवल मछली पकड़ने में सक्रिय हैं। डॉ. वि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी के नेतृत्व में दिनांक 20 सितम्बर 2020 को खोलसे बील में अलंकारी मछली पालन के लिए एक प्रशिक्षण-सह-जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य अलंकारी मछली पालन और प्रजनन के संबद्ध में प्रशिक्षण देना और एक क्लस्टर का विकास करना था। इस अवसर पर



इस बील से युक्त अनुसूचित जाति की 25 महिला मछुआरों को प्रशिक्षित किया गया। संस्थान के निदेशक ने महिला प्रशिक्षुओं को एफआरपी टैंक के साथ अलंकारी मछलीयों, मछली फीड और अन्य सामान वितरित किए। इससे उन्हें अलंकारी मछलीयों की बिक्री के माध्यम से अपनी आजीविका में सुधार करने में मदद मिलेगी। कोलकाता में अलंकारी मछली की मांग बहुत अधिक है और इसे ध्यान में रखकर इस क्लस्टर को विकसित किया गया है।



दिनांक 20 सितम्बर 2020 को सामाजिक दूरी का पालन करते हुये खोलसे बील में इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिभागियों को मास्क और सैनिटाइज़र भी वितरित किए गए। डॉ. पी. के. परीदा, नोडल अधिकारी, अनुसूचित जाति उप-योजना, भाकृअनुप-सिफरी ने सभा को संबोधित किया और महिला उद्यमियों को अपनी आजीविका सुधार के लिए अलंकारी मछली पालन की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रोत्साहित किया।

निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने इस बील में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए उपायों पर मछुआरों के सहकारी के साथ विस्तृत तौर पर चर्चा की। दिनांक 21 अगस्त 2020 से उत्पादन बढ़ाने के लिए खोलसे बील के मछुआरों को मछली के बीज के साथ 4 पेन क्षेत्र, 6 नाव और 1.2 टन मत्स्य आहार भी दिया गया। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. लियानथुमलिया, वैज्ञानिक और अन्य तकनीकी कर्मचारियों के द्वारा किया गया।

### महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान ने दिनांक 3 सितंबर 2020 को मत्स्य मंत्रालय, पशुपालन और डेयरी द्वारा आयोजित भारतीय जलों में विदेशी जलीय प्रजातियों की उपस्थिति पर गठित समिति की 25 वीं बैठक में भाग लिया। यह बैठक वर्चुअल मोड में आयोजित कि गई थी।
- संस्थान ने दिनांक 5 सितंबर, 2020 को "संबद्ध कृषि, पशुपालन और मत्स्य पालन" विषय पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया। यह वेबिनार किसान मित्र, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय,

भारत सरकार के सहयोग से एनआरएस कक्ष, आईआईएमबी द्वारा आयोजित किया गया था।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 7 सितंबर, 2020 को डॉ. अनिल राय, सहायक महानिदेशक, आईसीटी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के साथ माननीय महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में और सटीक कृषि के लिए नेटवर्क कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए बैठक में भाग लिया। यह बैठक परिषद के समस्त उप-महानिदेशकों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 8 सितंबर, 2020 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक की अध्यक्षता में मात्स्यिकी संभाग के समस्त अधिकारियों के साथ आयोजित ऑनलाइन बैठक में भाग लिया।



- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 9 सितंबर, 2020 को इन्फोफिश (INFOFISH) द्वारा आयोजित वैश्विक वेबिनर में भाग लिया। यह वेबिनर “प्रमाणीकरण तथा प्रौद्योगिकी” विषय पर आयोजित किया गया था।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 9 सितंबर, 2020 को यमुना नदी और इसके अपवाह तंत्र के आंकड़ों पर अंतर उप-समिति की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 11 सितंबर, 2020 को कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग/ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की योजनाओं के तृतीय पक्ष मूल्यांकन बैठक और समीक्षा बैठक में ऑनलाइन मोड में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 11 सितंबर, 2020 को खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा प्रायोजित लघु पैमाने पर मात्स्यिकी पर प्रलेख तैयार करने पर बैठक में भाग लिया। इस बैठक का आयोजन जूम प्लेटफॉर्म पर ऑनलाइन मोड में किया गया था।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 14 सितंबर, 2020 को मात्स्यिकी महाविद्यालय, नानाजीदेशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय

अधरताल, जबलपुर (मध्य प्रदेश) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला, फिश हेल्थ एंड डिजीज मैनेजमेंट इन ट्रोपिक्स” में भाग लिया। निदेशक महोदय ने “खुला जलक्षेत्रों में मत्स्या स्वास्थ्य प्रबंधन” (पर एक व्याख्यान भी दिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 15 सितंबर, 2020 को जीआईजेड, जर्मनी के साथ पोंग जलाशय की मात्स्यिकी आंकलन पर एक बैठक में भाग लिया। इस बैठक का आयोजन ऑनलाइन मोड में किया गया था।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 16 सितंबर, 2020 को देश के समस्त मात्स्यिकी महाविद्यालयों के संकाय अध्यक्षों (Deans) के साथ सचिव, मात्स्यिकी निदेशालय की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में भाग लिया। इस बैठक का आयोजन ऑनलाइन मोड में किया गया था।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 19 सितंबर, 2020 को एक-दिवसीय वेबिनर, “सतत विकास हेतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी” (Science and Technology for Sustainable Development) में भाग लिया। इस वेबिनर का आयोजन भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कानपुर चैटर द्वारा किया गया था और इसमें निदेशक महोदय ने आमंत्रित वक्तृता भी प्रस्तुत किया था।



- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 19 सितंबर, 2020 को एक-दिवसीय वेबिनर, “प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना” में भाग लिया। इस वेबिनर का आयोजन प्रेस इंफोरमेशन ब्यूरो के क्षेत्रीय केंद्र, पटना द्वारा डा. प्रेम कुमार, माननीय मंत्री कृषि, पशुपालन और मात्स्यिकी, बिहार सरकार की अध्यक्षता में किया गया था। इसमें निदेशक महोदय ने आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किया था।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 12 से 28 सितंबर 2020 के दौरान कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा में बौद्धिक संपदा (आईपीआर) की भूमिका पर एक कार्यशाला में भाग लिया। यह कार्यशाला भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना आईपीटीएम इकाई द्वारा वर्चुअल मोड में आयोजित किया गया।

## गतिविधियां

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 15 सितंबर, 2020 को चौथी राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन-भारतीय वन्यजीव संस्थान परियोजना नियंत्रण समिति की बैठक में भाग लिया। यह बैठक राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के महानिदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई इस परियोजना का शीर्षक “जलीय जीवों का प्रजाति संरक्षण और स्वच्छ गंगा के लिए गंगा नदी बेसिन में पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के रखरखाव हेतु योजना और प्रबंधन” था।

## प्रशिक्षण/जन जागरूकता/फील्ड दिवस



- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 11 सितंबर 2020 को किया गया। अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत इस प्रशिक्षण में यल्लमा



थाई मीनूगरारा शाहकारा संघ, वडेरहल्ली गाँव, थटागुनी पोस्ट, बेंगलोर साउथ तालुक के पचास अनुसूचित जाति के मछुआरों ने भाग लिया। इन मछुआरा प्रतिभागियों को मछली आहार, मास्क,



सैनटाइज़र और अन्य कीटाणुनाशक वितरित किए गए। उन्हें कोविड - 19 महामारी के दौरान सुरक्षित रहने के लिए शारीरिक दूरी बनाए रखने, मास्क का उपयोग और स्वच्छता के महत्व पर भी जागरूक किया गया।

- संस्थान के वैज्ञानिकों ने नेहरू युवा केंद्र, कोलकाता में दिनांक 16 सितंबर 2020 को आयोजित “कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में उद्यमिता के अवसर” पर एक वेबिनार में भाग लिया।

## अन्य

- जनजाति उप-योजना के अंतर्गत संस्थान ने आमफान चक्रवात प्रभावित सुंदरबन के रंगाबेलिया, गोसाबा द्वीप के 59 मछुआरों/लाभार्थियों को लगभग 1000 किलोग्राम चूना, तीन टन मछली फ्रीड और 150 किलोग्राम बीज वितरित किया। इसी प्रकार, सागर द्वीप में 380 किलो मछली के बीज को 98 आदिवासी मछुआरों को 1600 किलोग्राम चूने और 5 टन के मछली आहार के साथ वितरित किया गया।
- जनजाति उप-योजना के तहत असम के गोलपारा जिले के निष्क्रिय जल निकायों में सिफरी – केजग्रो फ्रीड का प्रदर्शन किया गया। यह प्रदर्शन मात्स्यिकी निदेशालय गोलपारा जिले के सहयोग से दिनांक 19 सितंबर 2020 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर छालोमटिया गाँव, गोलपारा जिले का कृष्णाई और कुचधौआ विकास खंड के आदिवासी मछुआरों को कुल 100 बैग मछली आहार वितरित की गई।
- संस्थान ने दिनांक 23 सितंबर 2020 को बंगाल के फरक्का में गंगा नदी पर तीन और दिनांक 24 सितंबर 2020 को झारखंड के महाराजपुर और साहिबगंज में रेंचिंग कार्यक्रम का आयोजन किया। इन रेंचिंग कार्यक्रमों के माध्यम से फरक्का में 50000 बड़ी अंगुलिकाओं और झारखंड के महाराजपुर और साहिबगंज में प्रत्येक में 75000 बड़ी अंगुलिकाओं को प्रवाहित किया गया। रोहू, कतला, मृगल और कैलाबसु की कुल 2 लाख बड़ी अंगुलिकाओं को गंगा नदी में प्रवाहित किया गया।

## सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों को सिफरी मासिक समाचार के तीन वर्ष पूरे होने पर हार्दिक बधाई। आप के सामने चतुर्थ वर्ष का प्रथम अंक (अक्टूबर, 2020) प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए हार्दिक धन्यवाद आशा है। आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। सम्पादक मण्डल के तरफ से सभी पाठकगण को आने वाले त्योहारों हार्दिक बधाई और ढेरों शुभकामनाएँ!

आप सभी को संपादक मण्डल की तरफ से धन्यवाद

